मन्दिर

# FORM I

(See Rule 8)

| | |
|---|---|
| Place of Publication | Hoshiarpur |
| Date of Publication | 10th of every month |
| Periodicity of Publication | Monthly |
| Printer's Name | Dr. Paras Ram Aggarwal |
| Nationality | Indian |
| Address | Manavta Mandir. Hoshiarpur |
| Editor's Neme | Dr. Paras Ram Aggarwal |
| Nationality | Indi |
| Address | |

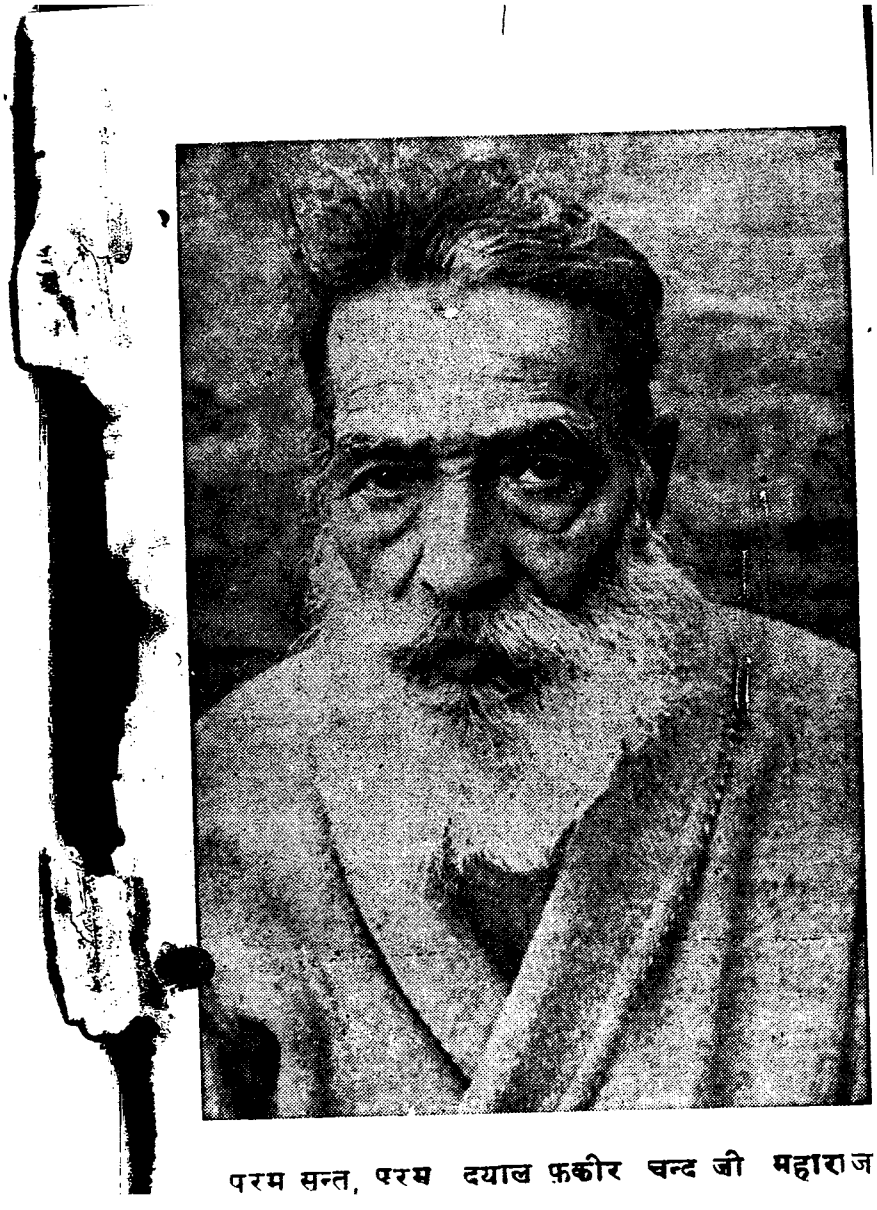

परम सन्त, परम दयाल फ़क़ीर चन्द जी महाराज

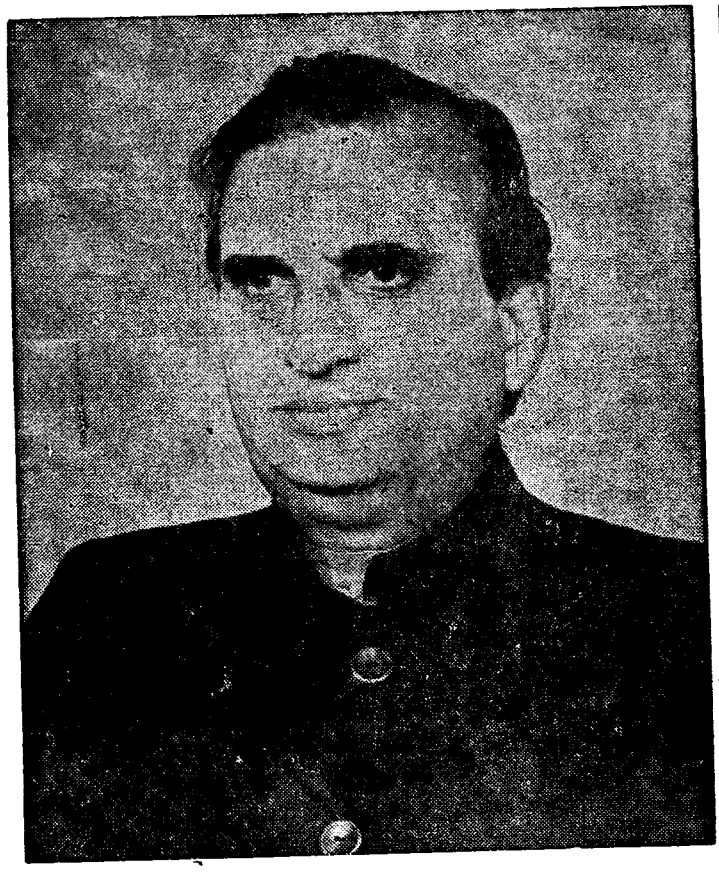

परम सन्त मानव दयाल डा० ईश्वर चन्द्र शर्मा जी महाराज

मासिक—

# मानव मन्दिर

सम्पादक :

डा० परस राम अग्रवाल

| वर्ष 11 | शुक्रवार 10 अगस्त 1984 | संख्या 4 |

# सत्संग परमसन्त परमदयाल फ़कीर चन्द जी महाराज द्वारा
## 10-6-1980 वेस्ट ब्रॉमविच

आके सतसंगत में ले, अपने जनम को तू बना।
त्याग दुर्मति दुर्गति दुचिताई और दुविधापना॥
राधास्वामी !

पहले मैं अपने आप से पूछता हूँ कि तू फ़कीरचन्द, सत्संग करता है, क्या तूने अपना जन्म बना लिया? यह सवाल मैं अपनी आत्मा से करता हूँ कि अगर तूने अपना जन्म नहीं बनाया तो तेरा क्या हक़ है दूसरों को कहने का कि तुम अपना जन्म बनाओ। क्या ऐसा सोचने के लिए मैं मजबूर नहीं हूँ? जब मेरा ही जन्म नहीं बना तो मुझे क्या हक़ है दूसरों को यह कहने का कि तुम अपना जन्म बनाओ। मैंने अपनी जिन्दगी में अपने जन्म को बनाने की कोशिश की है। जन्म किसे कहते हैं? हमारे अपने आप का ज़हूर में आने का नाम जन्म है। एक जन्म तो यहाँ का इन्सानी जन्म है, एक कीड़े-मकोड़ों का जन्म है, एक ऊपर के लोक हैं जहाँ देवता रहते हैं, कहीं धार्मिक लोग रहते हैं, कहीं हंस रहते हैं, इसलिए यह पहला सवाल मैं अपनी

आत्मा से करता हूँ क्योंकि मैं एक जिम्मेवारी को महसूस करता हूं।

दाता दयाल तथा हुजूर बाबा सावन सिंह जी महाराज ने कहा था कि चोला छोड़ने से पहले तालीम को बदल जाना। अब मैं अपने आप से पूछता हूँ फ़कीरचन्द, तूने अपना जन्म बना लिया ? जन्म, आपको मैंने बता दिया कि हमारे अपने ( Existence ) का, अपने होने के एहसास का होना ही जन्म है। अपने आपकी हस्ती के होने का ज्ञान होना, अपने होने को कुछ समझना, बाप हूँ, बेटा हूँ, भाई हूँ गुरु हुँ, चेला हूँ, धर्मी हूँ ,भक्त हूँ, ज्ञानी हूँ इस समझ का नाम ही जन्म का बनाना है। यह मैंने समझा और मेरी समझ में नहीं आया कि जन्म क्या है।

बच्चा पैदा होता है वह अपने आपको कुछ समझता है रोता है, घुटी माँगता है, नहीं माँगता है क्या ? किसी चीज के लिए रोता है, किसी खिलौने को माँगता है यानि अपने होने का एहसास करना ही जन्म का बनना है। अब जन्म के बनाने से क्या फायदा ? जिन्दगी में जो दुःख, क्लेश या फिक्र या चिन्ता हमको आती है। यह जन्म का विगड़ना है और यदि हमको दुःख नहीं आता, हम सुख में रहते हैं, शान्त रहते हैं, बेफिक्र रहते हैं, बेगम रहते हैं , यह जन्म का बनना है। मैंने ऐसा समझा है। मैं नहीं कहता कि मैंने जो समझा वह ठीक समझा है। मेरी उम्र गुजर गयी, चौरानवे साल का हो गया, मैंने इस वक्त में सारी उम्र खो दी क्योंकि मैंने प्रण किया था कि अपना अनुभव कह जाऊँगा। मेरे सद्गुरू और बाबा सावन सिंह जी ने यह फरमाया था कि तू निर्भय होकर काम कर जा। मैं जो कुछ कहता हूँ अपने जाती अनुभव से कहता हूं किताबों की लिखी हुई नहीं कहता । तो मैंने जन्म का

बनाना क्या सीखा ? क्या है जन्म का बनाना :-

आके सतसंगत में ले, अपने जन्म को तू बना।

वह कहते हैं कि अगर अपने जन्म को बनाना चाहता है तो सत्संग में आ। क्यों ? हम सत्संग में क्यों जायें ? यह सवाल है कि हम सत्संग में क्यों जायें ? लोग तो भेड़-चाल के लिए जाते हैं। भाई सत्संग में चलो यदि सनातनी हुए तो भाई मन्दिर में चलो मत्था टेक आओ। कोई गुरुद्वारे में जाते हैं, आनन्दपुर साहिब में जाते हैं, कोई गिरजाघर में जाते हैं, कोई मक्का में जाते हैं। हम सत्संग में क्यों जायें ? सत्संग में मिलता क्या है ? सत्संग में मिलती है सच्ची समझ सच्चा ज्ञान, सच्चा तरीका, जिस तरीके को समझ करके हम अपना जीवन गुजारें तो हमको दुःख या सुख, नेकी या बदी जो कुछ भी हम दुःख सहते हैं वह नहीं सहेंगे, सत्संग में जो मैंने समझा वह आपको कहता हूँ :-

त्याग दुरमति दुरगति दुचिताई और दुविधापना।

यह सत्संग कैसे बनता हैं। दुर्मति क्या है ? ग़लत रास्ते को बुरी मत और बुरी अक्ल को। जिससे हमको तकलीफ हो वह कुमति है और जिस रास्ते पर चलने से हमें सुख प्राप्त होता है वह सुमति है। सुमति अच्छी बात है। अब मैं अपनी आत्मा से पूछता हूँ, फकीरचन्द ! लोगों को कहने से पहले तू अपने आप को पूछ कि क्या तूने जन्म बना लिया ? मैंने जन्म यह बनाया कि मैं अब चिन्ता नहीं करता, फिक्र नहीं करता न ईश्वर के मिलने की, न भक्ति की, न ज्ञान की, न किसी चीज की। यह सन्तों का मंजिले-मकसूद है जहाँ हमें पहुँचना है। यही गुरु नानक साहिब आप को कह गये - निरभौ, निरभय ऐसा एक सिखों का मन्त्र है यानि अडोल रहना, घबराना नहीं तथा चिन्ता या फिक्र न करना। आज एक

लड़की मेरे पास आई उसका लड़का तीन महीने का गुजर गया था। उसको, उसकी सास को, उसके पति को यह फिक्र था कि हमारे लड़का नहीं है। कई आदमी आते हैं कहते हैं हमारा धन का नुक्सान हो गया, कई आदमी कहते हैं मेरे को मुकद्दमा लग गया तो उसकी वह चिन्ता करते हैं। मैंने किसी कारण से अपनी उम्र खोयी है। किसी सबब या बिना कारण के कोई कार्य नहीं करता, मैंने यह काम इसीलिए किया। जब मैं सन्तमत में शामिल हुआ था तो 24 घण्टे रोया था। रात को मुझे एक दृश्य आया था जो मुझे दाता दयाल महर्षि शिवव्रत लाल बर्मन के चरणों में ले गया। दाता दयाल जी महाराज, बाबा सावन सिंह जी महाराज सच्चे मित्र तथा गुरु थे। दाता दयाल जी ने 5-6 हजार किताबें लिखी हैं तो मैं बेफ़िक्र क्यों हो गया? कैसे होगया? मुझको तजुर्बे ने यह साबित किया है कि हमको, तुमको जो कुछ मिलता है वह हमारे कर्मों का फल मिलता है। कई कहते हैं आवागमन नहीं है। अच्छा भाई न सही, नहीं होगा मगर मैं पूछना चाहता हूँ कि जब एक बच्चे को पोलियो होजाता है या अन्धा हो जाता है या कुछ और हो जाता है तो उसको क्यों वह तकलीफ हुई? उस छोटे बच्चे ने कोई बुरा काम नहीं किया जो उसको तकलीफ हुई, तो इससे यह साबित हुआ कि यह जो कुछ हुआ वह उसके पिछले जन्मों के कर्मों का नतीजा था। मानना पड़ता है या नहीं मानना पड़ता है? जरा सोचो मेरी बात को, आप लोग सत्संग में आए हैं सत्संग तमाशा नहीं हैं न यहाँ छैणे बजाये जाते हैं। सत्संग है क्या? रामायण में लिखा है:-

'बिन सत्संग विवेक न होई, राम कृपा बिन सुलभ न सोई'

बिना सत्संग के सच्ची समझ नहीं आती यही दाता दयाल जी महाराज लिखते हैं:-

'आके सत्संगत में ले, अपने जनम को तू बना'।

सत्संग से मिलता क्या है ? सूझ मिलती है, समझ मिलती है। आदमी जहाँ गलती खाता है उस गलती का उसको पता लग जाता है कि मैं यहाँ गलती खा रहा हूँ। मेरे भी चार बच्चे मर गये, एक लड़का भी मर गया, औरत मर गई, माँ-बाप मर गये, दातादयाल जी महाराज का चोला छूट गया मेरी आँखों में आँसू तक नहीं आये। क्यों नहीं आये ? क्योंकि मैंने सत्संग किया हुआ था, अजल से यह सारी दुनिया ही सत्संग है। अगर आदमी गौर से देखे, तजुर्बा करे तो दूसरों की जिन्दगियों से तजुर्बा हासिल हो सकता है। यह हमारे ही कर्मों का फल है। फर्ज करो कि हम अपने कर्मों का फल नहीं मानते। कई ऐसे मज़हब हैं जो जन्म-मरण को नहीं मानते तो फिर मैं यह कहने का हौंसला करता हूँ कि जिस ताकत ने इस दुनिया को बनाया है वह जालिम है। यही सन्त मत में लिखा हुआ है कि काल निर्दयी है, काल जालिम है। उस काल का अंश हमारे अन्दर हमारा मन है और यह मन ही हमारे सुख-दुःख का कारण बनता है, अगर इस मन को सत्संग में जाकर सूझ दो जाये तो उस सूझ के आधार पर तुम सुखी या दुःखी हो सकते हो और कोई तरीका नहीं है। मसलन् गुरु गोविन्द साहिब के चार शाहज़ादे मर गये, उन्होंने क्या कहा "कि तेरा भाँणा मिठ्ठा लागे" गुरु गोविन्द सिंह के दिमाग में वह सूझ थी इसलिए उन्होंने कहा कि तेरा भाणा मीठा लागे। इस वास्ते सत्संग से सूझ मिलती है। क्या सूझ मिलती है ? बुरे ख्यालात को छोड़ो, दुर्मति को त्यागो:—

त्याग दुरमति दुरगति दुचिताई और दुविधापना।

इन्सान दुविधाई पर आ जाता है। कोई काम करना पड़ता है तो सोचता है कि करूँ या नहीं करूँ। दुविधा में आ जाता है कि इसके करने से घाटा पड़ेगा या मुनाफा होगा। तो समझ में आ गया कि जो कुछ किसी को मिलना है वह उसके अपने कर्मों का फल है या अगर कर्म नहीं मानते तो जिस परमात्मा ने या जिस कालपुरूष ने इस दुनिया को बनाया, सिखों को इस बात का इल्म नहीं है कि गुरु नानक साहिब ने अकाल-पुरूष को नाम क्यों रखा? हिन्दुओं में किसी ने नहीं रखा हुआ है। सिर्फ गुरु नानक साहिब ने अकालपुरूष का नाम रखा है। सतश्री अकाल क्यों? क्योंकि अकाल गति वह है जो मन से परे हैं। जहाँ तुम्हारा मन नहीं है उससे परे की जो हालत है उसका नाम है अकाल, कोई उसको दयाल कह देता है, कोई उसको परमत्व आधार कह देता है। जिस तरह से बैटरी तुम्हारे पास है उसके अन्दर एक वोल्टेज होता है, एक करेण्ट होती है। करेण्ट काम करती है, पंखे चलाती है, बैटरी चलाती है मगर वोल्टेज अपने आप में कायम रहता है। इसे ही अकालपुरूष, या मालिके कुल या राधा-स्वामी या परमतत्व आधार या सत कहते हैं। यह क्या चीज है? जिस तरह से इलैक्ट्रोमोटिव फोर्स बैटरी में रहती हुई अपने आप में कायम रहती है, इसी तरह से वह अकाल-पुरूष जिसको सन्त मानते हैं, गुरू नानक साहिब मानते हैं, दादु साहिब, पलटू साहिब मानते हैं, हिन्दु भी मानते हैं भू, भूर्वः, स्वः, मह, जनः, तपः, सत्यम्, उसको भी मानते हैं तो उस अवस्था को हासिल करने के लिए किस चीज का जरूरत है, तुम लाख किसी से नाम ले लो (आज आप आये थे व कि बाबा जी नाम दे दो,) तुम यह उम्मीद करो कि जब तक तुम्हारे दिल से दुर्मति नहीं जाती और सुमति नहीं

आती दूसरे मायने में सच्ची समझ तुमको नहीं आती वह नाम जैसा लिया वैसा न लिया उसका कोई फ़ायदा नहीं। क्योंकि हमारे मन में ख्यालात पैदा होते रहते हैं। इन ख्यालात को रोकने के लिए कि ख्यालात न उठें, तुम्हारा मन तुम्हारे काबू में रहे सत्संग है, सुमिरन, ध्यान और भजन है। जो तुमको तमाम सन्त देते हैं, कोई सुमिरन सतनाम का देता है, कोई वाहेगुरु का देता है, कोई पाँच नाम का देता है कोई राधास्वमी का देता है, कोई राम नाम का देता है, कोई अल्लाहू का देता है, यह जो सुमिरन है इस वास्ते है कि तुम्हारे अन्दर से जो दुर्मति के ख्याल निकलते हैं जब वह निकलें तब उनको सुमिरन के ख्याल से रोको। सुमिरन, भजन, ध्यान का असली मतलब यह है कि अगर कोई आदमी एक घण्टा, दो घण्टा कान में अंगूली डालकर के सुबह को सुमिरन करता है और सारा दिन मन दुर्मति में ही गुजार देता है तो उसको दो घण्टे सुमिरन करने का कोई फायदा नहीं है। आप खुद सोचो यह अमली जिन्दगी का है या नहीं है। इस वास्ते जो सुमिरन करते हैं उनको यह चाहिए कि दो घण्टे नहीं बैठ सकते हैं न बैठें सिर्फ अपने मन की चाल को दुरुस्त करें, जब मन के अन्दर कोई दुर्मति का ख्याल आने लगे तो उसको ज्ञान से, समझ से रोको ताकि उसका असर तुम्हारे मन पर खराब न पड़े। यह सारा जन्म बनाने का पहला अलिफ,बे, पे है सुमिरन, ध्यान, भजन जो दिया जाता है यह अलिफ, बे, पे, है। इससे आदमी को आगे चलने का मौका मिलता है। इससे क्या होगा ? सत्संग से बात समझ में आ जायेगी और दुर्मति जाती रहेगी। दुर्मति किसे कहते हैं?दुर्मति कहते हैं बुरे ख्याल, बुरी मत को अब सोचो बुरी मत क्या है ? जिस ख्याल के आने से

तुम स्वयं दुःखी हो वह सबसे बुरी मत है, अपने आपको दुःखी करना सबसे ज्यादा दुर्मति है। आप, हम सब गृहस्थी हैं, दुखी होते हैं। तुम किसी पर गुस्सा करते हो, गाली निकालते हो पहले तुम्हारा अपना मन जलेगा फिर दूसरों का दिल जलेगा। अगर तुम किसी से प्रेम से बोलते हो तो पहले तुम्हारे दिल में प्रेम आयेगा फिर दूसरों के अन्दर प्रेम आयेगा। इस वास्ते सन्तों ने दाता दयाल जी महाराज ने वाणीं लिखी है:-

'मीठी वाणी बोलो मुख से,मन रहे निरमल शुद्ध शरीर'

दुर्मति को दूर करने के लिए सब से पहली क्या चीज है ? हरएक आदमी से तुम्हारा व्यवहार दुर्मति का नहीं होना चाहिए। बुरी मत से तुम्हारा दिल दुःखेगा। आप सुनें या न सुनें, आप उस पर अमल करें या न करें मैं इसकी परवाह नहीं करता। मेरे जिम्में duty है और मैं संत सद्गुरु वक्त हूँ और वक्त के हिसाब से जिस चीज़ की जरुरत है मैं वह कहता हूँ दाता दयाल जो की आज्ञा से, बाबा सावन सिंह जी की आज्ञा से यह काम करता हूँ। मैं दावा नहीं करता कि मैं जो कुछ कहता हूँ यही सही है। आगे सुनिये क्या कहते हैं :-

मीठी वाणी बोलो मुख से, मन रहे निर्मल शुद्ध शरीर।
कड़वा वचन कलेजा बेधे, हिंसा की तलवार।
जिह्वा बाँध क्यों फ़िरते हो, भाला छुरी कटार।

अब तुम देखो, क्या तुम घरों में मीठी वाणी बोलते हो ? बुरा न मानना मेरी बात का अपने आप सोच लो। बीबी के मन में जो आया खसम को कह दिया। खसम के मन में जो आया बीबी को कह दिया, तो फ़िर मीठी वाणी कहाँ से हुई फिर अगर तुम को बीमारियां आतीं हैं या तकलीफें

आती है तो यह अपने ही ख्याल का नतीजा है, जैसा ख्याल वैसा हाल, जैसी मति वैसी गति, जैसी करनी वैसी भरनी

उर में साले सुनने वाले, दुखी बने दिलगीर।
मुँह तो बना भयानक बाँबी, निकले बिच्छू-साँप।

जब तुम घर में लड़ाई करते हो, किसी के घर में झगड़ा करते हो तो तुम्हारे मुँह से साँप-बिच्छू निकलते हैं न। जो एक दूसरे को डंसते हैं, खाते हैं। एक दूसरे से लड़ाई होती है यह होता है वह होता है :-

डस डस खायें घाव करें गाढ़ा, यहा समझ यह पाप।
प्राणी कुछ तो सोच-समझ मन अपने, देना पीर बेपीर।

ख्वामखाह अपने मुख से ऐसी जबान मत बोलो जो किसी का दिल दुखाऐ। अब तुम घरों में देखो हम क्या करते हैं? यहाँ का मुझे पता नहीं आप लोग शायद इंगलिस्तान में रहते हैं आप अच्छे होंगें। मुझे हिन्दुस्तान की याद है, बीवी कहती है कि जब से मैं तेरे घर ब्याह हुई आई हूँ मुझे सिवाय दुःखों के क्या मिला? न मैंने घर में कुछ देखा। मर्द भी कहता है कि जब से तुझ जैसी डायन घर में आई है मैंने मुसीबत ही पाई है। यह होता है कि नहीं होता है बताओ न? तुम कहती हो कि नहीं कहती हो। मैं भी आपकी तरह गृहस्थ हूं, पुत्र है, पौत्र है, दो बेटियां है, जमाई है याद रखो गृहस्थी का गुरू गृहस्थी होना चाहिए। यह साधु जो लंगोटी लगाये फिरते हैं इनको क्या पता है कि गृहस्थ को क्या दुःख होते हैं। एक आदमी गुरू है, सोने के कड़े पहने हुए है, जहां जाता है पैसे ही पैसे और वह बड़े अमीर हैं। वह क्या जाने कि दुखियों का, गृहस्थियों का क्या हाल होता है। मैं दुःखी रहा हूँ, मुझे गृहस्थियों का इल्म है। मैं वह बात कहता हूँ जो बात मेरे तजुर्बे में है। जो कुछ

मैंने आपको कहा है वह मेरी औरत भी कह दिया करती थी। पिछली उम्र में वह बीमार रहा करती थी, मैं दवाईयाँ लाया करता था, वह कहती थी कि शिवाय दवाईयों के तेरे पास है ही क्या ? मैं आपसे झूठ क्यों बोलूं ? मैं गृहस्थी हूं, आपको बताता हूँ मगर मैंने उसकी किसी बात पर कभी गुस्सा नहीं किया। बुढ़ापे में 6 साल बीमार रही, मैंने कभी बुरा नहीं माना क्योंकि मैं जानता था कि इसका कसूर नहीं है, इसका बूढ़ापा है। तुमलोग हो तुम्हारे बड़े-बूढे मां-बाप है, उनके दिमाग ठीक नहीं रहते हैं, यह बाज दफा ऊट-पटांग बोल देते हैं तो लड़कों तथा उनकी बहुओं को चाहिए कि उनकी बात को महसूस न करें कि क्या कहा किसी ने ?

क्यों मुख बना नरक की खानी दुर्गन्धी अस्थान।
जब बोलो तब निकले सड़ांध समझ जो चतुर सुजान ॥

तुम घरों का हाल देखो क्या होता है ? क्या कुछ हम नहीं कहते हैं ? क्या कुछ हम नही बोलते हैं ? सब कहते हैं। बीबियाँ बोलती है, मर्द भी बोलते हैं, बच्चे भी बोलते हैं। तो जन्म का बनाना क्या है ? दुर्मति को त्यागो। दुर्मति यही है कि जिस बात के कहने से अपना दिल दुःखे और दूसरों का दिल दुःखे वह दुर्मति है। जब तुम गुस्सा करते हो तो पहले अपनी आत्मा को दुःखी करते हो फिर दसरों की आत्मा दुःखी करते हो। इस वास्ते यह दुर्मति है।

इस करतब से जाये पड़ेगा नरक कुण्ड के तीर।
जब बोले तब मीठी वाणी, वाणी अधिक स्वाद।

क्या नरक - स्वर्ग होता है ? यह सवाल मैं अपनी आत्मा से पूछता हूँ। किताबों की लिखी हुई को क्या सुनाऊँ। तुम लोगों को बताता हूँ कि तुम रात को स्वप्न में

चले जाते हो। कई औरतें मेरे पास आती हैं, कहती हैं बाबा जी साँप डँसता है. मैंने उन साँपों के निशान उनके जिस्म पर देखे हैं परन्तु दो दिन के बाद ये निशान साफ हो गये। ख़्याल के अन्दर बड़ी भारी ताक़त है। मैं तुम को दो चार रोज से यही कहता आया हूँ कि तुम्हारे ख़्याल में बड़ी भारी ताक़त है। अगर स्वप्न के ख़्याल का असर तुम्हारे जिस्म पर होता है तो जागते में तुम जो कुछ सोचते-समझते हो उसका असर क्यों न होगा? एक सच्चा वाक्या तुमको बताता हूं।

हजारी सिंह सूबेदार मेजर है। सिपाही था, मुझ पर बड़ी श्रद्धा रखता था। वह समझता था कि मैं उसकी मदद करता हूं। मैं उससे कहा करता था कि मैं कहीं नहीं जाता मगर वह मानता नहीं था। अमृतसर में सत्संग हो रहा था। वह भी आया और उसने एक वाक्या सुनाया। क्या? 'मेरे चाचा की गुदा में फोड़ा था, बहुत गरीब था। मैंने उसको अपने घर बुलाया, मैंने उसको चीरा दिया, जख़्म को ठीक किया। वह दो घण्टे बेहोश रहा, जब उसको होश आया तो उसने कहा हजारी सिंह! तुमने बड़ा एहसान किया। उसने कहा कि मैंने क्या एहसान किया? उसने कहा कि दो आदमी आये मेरी रूह को हाथ पर रखा, आगे जाकर ऐसी जगह रखा जहाँ बहुत-सी रूहें पड़ी थीं और एक काले रंग की औरत जिसके मुँह से आग निकलती थी और वह रूहों को खाती थी तो मैं डर गया। जो आदमी मुझे ले गये थे मैंने उन आदमियों से कहा कि भई इसने मुझे खा तो जाना है पर तुम मुझको एक आदमी से मिला दो। उन्होंने कहा कि कौन सा आदमी? मैंने कहा हजारी सिंह। हजारी सिंह तू मेरे पास आया। मैंने तुमको

कहा कि हजारी सिंह तुम बाबा फकीरचन्द जी से कहो कि वह मुझको यहाँ से बचा लें। तो हजारी सिंह तू चला गया। बाबा फकीरचन्द जी आये और उन्होंने मुझे पकड़ा और कहा कि तू अपने घर वापस जा। बाबा ने उस औरत को कहा कि तू इसको नहीं खा सकती, यह मेरा जीव है। मैंने हजारी सिंह को पूछा कि भाई तू गया था? उसने कहा कि मैं तो नहीं गया तो मैंने कहा बेवकूफ के बच्चे मैं भी इसी तरह किसी के अन्दर नहीं जाता। यह जितना खेल है वह हर एक आदमी के अपने मन का खेल है। आदमी सोचता है कि मैं नरक में था। मैं कहता हूँ कि नरक में था। स्वप्न में देखो किसी की बांह कटती है, किसी का सिर कटता है, कोई दरिया में डूबता है, कोई कुएँ में डूबता है, कोई बाग देखता है, कोई दृश्य देखता है, कोई कुछ देखता है, तो वे जो हमारे मन के गन्दे ख्यालात हैं वह साँप-बिच्छू बनकर आते हैं। कुछ पिछले जन्म के कर्म होते हैं, कुछ इस जन्म के कर्म होते हैं। मेरी औरत को नाम मिला। साल भर तो मैंने पूछा नहीं कि तू क्या करती है। साल के बाद मैंने पूछा तू अभ्यास करती है क्या? तेरा हाल क्या है? कहने लगी कि मुझे साँप, चूहे, शेर, बाघ नजर आते हैं। मैंने यह चीज दाता दयाल से कही, उन्होंने कहा कि उसको बोलो कि वह पिछले जन्म के कर्म हैं। अभ्यास छोड़ दे। तुम्हारी संगत में रहती है उसका अंजाम अच्छा होगा। पहले उसने दुःख जरूर उठाया मगर जब वह मरी तो हमको पता नहीं लगा कि वह कब मरी। मैं मन्दिर में चला गया पीछे से आदमी दौड़ता हुआ आया कि माता जी मर गयीं। मौत एक लम्बा स्वप्न है। जिसके ख्यालात अच्छे होते हैं उसको स्वप्न में डर नहीं लगता है। बाजे वक्त पिछले

ख़्यालात, पिछले जन्मों के कर्मों के ख़्यालात, अगर आदमी नेक है और भक्ति में शामिल है तो उसके ये ख़्यालात स्वप्न में कट जाते हैं। तुम सोचोगे कि मैं क्यों कहता हूँ, मेरे साथ बीती हुई है। बसरा-बगदाद में, मैं 1916 में लड़ाई के मैदान में चला गया। 1918 में मुझे एक स्वप्न आया। मैंने स्वप्न में अपने ब्राह्मण खानदान की एक औरत से भोग किया, जब मेरी आँख खुली तो मैंने अपने सिर में हाथ मारा, छाती पीटी, बड़ा रोया कि मैं बड़ा पापी हूँ मैंने यह किया, मैंने वह किया। मैंने एक चिट्ठी अपने बाप को लिखी कि रात को मेरे साथ यह गुजरी आप मेरा टेवा दिखाओ और एक चिट्ठी मैंने गुरु महाराज को लिखी। मेरे बाप ने मुझको लिखा कि पिछले जन्मों के कर्मों की वजह से तुझको यह कुकर्म करना था। दाता दयाल जी का पत्र आया कि यह तेरे पिछले जन्म के कर्म थे चूँकि तू भक्ति में है इसलिए तेरे वह कर्म स्वप्न में कट गये अगर जाग्रत में करते तो तुम किसी को मुँह दिखाने के काबिल न रहते। तो नेक आदमी को कर्म किये का फल तो मिलता है। बाजे कर्म ऐसे होते हैं कि अच्छे आदमियों के स्वप्न में कट जाते हैं। तो दुर्मति क्या है? हमारे बुरे ख़्याल और सुमति क्या है? हमारे अच्छे ख़्यालात हैं। समझ गये मेरी बात को मैंने क्या कहा?

पहला शब्द ले लो इसमें बहुत कुछ मैंने समझा दिया। वह जो आदमी हज़ारी सिंह था वह मानता नहीं था। जब मैंने उससे पूछा कि तू गया था तो कहता है कि मैं नहीं गया। मैंने कहा बेवकूफ़ मैं भी नहीं जाता। हम लोगों को इन गुरुओं ने, महात्माओं ने, मज़हबों ने बेवकूफ़ बना कर लूटा है, हमें पागल बनाया है। हमने अपने बच्चों के पेट काट-काट कर इन के डेरे, इन के आश्रम बना दिये।

सच्ची बात तो हम को किसी ने नहीं कही कि कोई महात्मा किसी के अन्दर नहीं जाता। मैं जो कुछ कहता हूँ सच कहता हूँ। मुझे अगर वही काम करना होता जिससे दूसरे गुरु बन गये तो मुझे नयी दुकान खोलने की ज़रुरत नहीं थी। लड़का मेरा दो हज़ार आठ सौ तन्ख्वाह लेता है, बहू मेरी एक हज़ार लेती है। अपना मकान है मुझे, किसी चीज़ की कमी नहीं है। मन्दिर के लिए जो किसी की मर्जी हो दे दे, ना दे तो मौज करे, यह बात नहीं। तुम लोगों को मैं सत्संग कराना चाहता हूँ। आप लोग आये हैं अगर मेरी बात बुरी लगे तो कल को मत आना मगर मैं बिल्कुल सच्ची बात कहुंगा। जो मेरे साथ बीती है। मैं खुद अपना काला मुँह करता हूँ और आपको सच्ची बात बताता हुँ। नरक-स्वर्ग यहीं है। जब आदमी मर जाता है तो उस का शरीर आसमान में कुछ दिन घूमता रहता है। अगर वह सत्संगी है तो उसको गुरु के दर्शन भी होते रहेंगे और वह सत्संग भी सुनता रहेगा। जैसे हम स्वप्न में देखते हैं जब फिर कोई कामिल गुरु संसार में आयेगा तब उस के सम्पर्क में आकर बाकी कमाई पूरी करेगा। वह बाकी कमाई मेरी तुम लोगों ने पूरी करनी है। इसलिए इसमें मैं सत्संगियों को अपना सच्चा सद्गुरु मानता हूँ क्योंकि जब से मुझे यह यकीन हआ कि मैं तो किसी के अन्दर जाता नहीं मुझे पता नहीं तो मुझे यह भी यकीन होना चाहिए कि जो मेरे अन्दर कुछ फुरना फुरती है, जो कुछ मैं अपने अन्दर अभ्यास में देखता हूँ, जागृति में, स्वप्न में, वह भी दरअसल है नहीं मेरी अपनी ही कल्पना है, इस बात का मुझे यकीन हो गया। इसलिए जब मैं अभ्यास करता हूँ तो मन को छोड़ जाता हूँ, न रूप, न रंग, न रेखा। यही गुरु गोविन्द

सिंह साहिब ने कहा अरंगम, अरूपम और जैसे उनके शब्द हैं, मुझे वाणियाँ याद नहीं है। आप में से कई सिख लोग हैं आपको याद होगा! तो इन्सान का ख्याल ही दुर्मति है और ख्याल ही सुमति है। पहला शब्द पढ़ो क्या लिखा है :—

आके सतसंगत में ले, अपने जन्म को तू बना।

कैसे बनावे सत्संग में ? बात को सुनेगा, समझेगा, उस पर अमल करेगा तब जन्म को बनायेगा। यूं जन्म नहीं बनता। सिर्फ मुझको अगर दो हजार पौंड दे दो, मुझे कपड़े दे दो, मत्थे टेक दो तो तुम्हारा जन्म नहीं बनेगा, यह तो दुनिया का व्यवहार है, पैसा दोगे पैसा मिलेगा, कुछ दोगे कुछ मिलेगा। पीछे से उस गुरु का एहसान रह जाता है जिसने आपको ज्ञान दिया है। मैं आप लोगों को ज्ञान देता हूँ अपनी तरफ से ! आप समझो या ना समझो। यह मेरे वश की कोई बात नहीं है। वह कहते हैं कि संगत में जाकर के अपने जन्म को बनाओ फिर क्या करोगे :—

त्याग दूरमति दुरगति, दूचिताई और दुविधापना।
दुविधा कहते हैं किसी काम को करूँ या ना करूँ।

मैं काम करूंगा तो नफा होगा कि नहीं, घाटा न पड़ जाये, वह न हो जाये, ऐसे ही ख्याल का दिमाग में आना दुचिताई कहलाता है। उसमें इन्सान को शान्ति नहीं रहती है। कभी सोचता है यह करूँ, कभी सोचता वह करूँ, लेकिन होगा वही जो कुछ होना है। संत कहते हैं —

"तुलसी मन मैदान में तान पिछौरा सो,
होनी अनहोनी नहीं, अनहोनी होनी न हो"

ये जो कर्म तुमने किये हैं अगर अपने कर्म नहीं मानते तो दोष उस कर्ता का ही है। अब तुम देखो, वृक्ष होते हैं इन वृक्षों को कोड़े लग जाते हैं, कीड़े पत्तों को खाते हैं, खाते हैं

कि नहीं खाते हैं, जड़ता में जान है, साईन्स से साबित हो गया है कि एक कीड़ा दूसरे कीड़े को खाता है, दूसरा तीसरे को खाता है, पंछी कीड़ों को खाते हैं, एक पंछी दूसरे पंछी को खाता है, एक जानवर दूसरे जानवर को खाता है, शेर-बाघ सब अन्य जानवरों को खाते हैं। आदमी आदमी को खाता है। ईश्वर ने या उस अकालपुरुष ने आदमी को अपने रूप पर बनाया है जिस तरह वह ज़ालिम है उसी तरह इन्सान ज़ालिम है, बुरा न मानना। अब पूछो कैसे ? हम अपनी खुशी के लिए, अपने स्वार्थ के लिए औरतों के पास जाते हैं। बच्चे आ जाते हैं फ़िर उन बच्चों से यह उम्मीद करोगे कि वह बच्चे तुम्हारे किसी काम आ जायेंगे बिल्कुल ही झूठ है। मैं नहीं मानता इस बात को, किसी सुरत में मानने के लिए तैयार नहीं हूं क्योंकि मेरे तर्जुबे में यह बात आयी। मेरी एक लड़की है, B.D.O. की wife है, पढ़ी-लिखी है। मां उसे कुछ कहती तो मां को जबाब देती। एक दिन मैंने पूछा बेटी क्या बात है? माँ तेरी शिकायत करती है। लड़की रो पड़ी और कहने लगी पिताजी मेरे वश की कोई बात नहीं। मां कुछ कहती है तो मेरे मुंह से जबाब निकल जाता है। पीछे मैं रोती भी भी हूँ, सिर भी पीटती हूं कि मैं क्यों बहस कर गयी पर मेरे मुँह से निकल जाता है। अब मैं जानता हूं कि उसके मुंह से क्यों निकलती थी ? मेरे औलाद थी, मुझे औलाद की जरूरत नहीं थी और न मेरी औरत को थी। मैं खुद कामातुर हुआ और मैं खुद आधा घण्टा अपने मन के साथ

झगड़ता रहा। आध घण्टे बाद काम ने मुझे काबू कर लिया, लड़की पेट में आ गई। मुझे याद है मेरी औरत ने मुझसे दवाई मंगवा कर खाई कि Abortion (गर्भपात) हो जाये मगर Abortion नहीं हुआ। जब मां, बच्चे के पेट में आने पर उसका Welcome नहीं करती है तो तुम कैसे कह सकते हो कि बच्चा तुम्हारा ताबेदार बनेगा। तुम सोचो मेरी बात को मैंने क्या कहा है ? हम को सत्संग नहीं मिलता है, जो सत्संग कराने वाले हैं वे सिवाय नाम, नाम, नाम, नाम, नाम के और कुछ बताते नहीं हैं। जो हमारा असली दुःख का कारण है उसको कोई नहीं बताता है। सोचो ! औरतें मेरे पास आती हैं। परसों ही एक औरत आई, हमारे लड़की नहीं है।

"है पशुयोनि में पशु ज्यों कर रहा है कल्पना"

मैं अमेरिका में जाता हूँ वहाँ मेरे कम-से-कम दो-टाई हज़ार चेले हैं। मैं उन से साफ कह देता हूँ You are animals आपकी ज़िन्दगी भी कोई ज़िन्दगी है वह सब Animal life है। तुम सिर्फ़ यही जानते हो कि खाओ-पीओ, मांस खाओ, शराब पीओ, ऐशो-अशरत करो, बस यही तुम्हारा काम है। यही दाता दयाल जी महाराज कहते हैं तुम जागते हो, सोते हो मगर कुछ सोचते नहीं हो, न अपने जन्म को बनाते हो, न तुम्हें पता है कि हम कहाँ से आये हैं, कहाँ को जायेंगे, इसका नतीजा यह होता है कि इन्सान बार-बार जन्म लेता है। अब तुम कहोगे कि बार-बार जन्म लेता है या नहीं लेता है। इसका सबूत मेरे पास अपना है।

होशियारपुर में मेरी मां प्लेग से मर गई। मैं और मेरा भाई उस समय बगदाद में थे तो मेरे बाप ने मुझको लिखा कि तेरी मां प्लेग से मर गई। मरने से पहले उसने

तुमको और तुम्हारे भाई सुरेन्द्र नाथ को याद किया और यह कहा कि जैसे मेरे दो बच्चे हैं इसी तरह फकीरचन्द और सुरेन्द्र नाथ के दो-दो बच्चे हों। यह कहा मेरी मां ने और मर गई। मुझे याद था कि मेरी मां मुझे कहा करती थी, बच्चा ! मैं औरत का चोला नहीं लेना चाहती ; यह बड़ा दुःख का कारण है। अब मैं अगर पैदा होऊंगी तो मर्द बनूंगी स्त्री नहीं बनूंगी ; मुझे उसके ख्याल का पता था। मैंने अपना अन्दाज़ा लगाया कि चूँकि उसने मरते समय मुझे और मेरे भाई को याद किया है और उसकी ख्वाहिश थी, तो मेरा छोटा भाई था उसको मैंने कहा—सुरेन्द्र नाथ ! एक बात कहूँ ! कि हाँ, मां तुम्हारे घर में लड़का पैदा होगी और वह लड़का पैदा हुआ। वह मेरी भी बड़ी इज्ज़त करता है और बाप की भी। यह मेरा तजुर्बा है, इसवास्ते मैं कहता हूँ कि आवागमन है। दूसरा सबूत आपको देता हूँ।

मेरी एक लड़की थी प्रेम प्यारी, उसका पति देशराज था। वह कोयटा में मर गई। मेरी औरत वहां थी जब वह आई तो मैंने उससे पूछा कि उसका अन्त समय कैसे गुज़रा ? उसने कहा कि पहले उसने अपने खसम को याद किया। वह दवाई लेने अस्पताल गया हुआ था। फिर उसने सरला को याद किया। सरला, पंडित बलीराम हकीम की लड़की थी। दोनों आपस में सहेलियाँ थीं। तो जब मेरी औरत गई थी तो सरला ने "एक सजनी" नामक नावल मेरी लड़की को भेजा था ओर लिखा था कि यह नावल मैं सरला को भेंट करती हूँ। उसने सरला को याद किया और उसके प्राण निकल गये। हकीम बलीराम मेरे पास अफसोस करने के लिए आया। मैंने कहा—काहे को

आज का जो शब्द निकला है उसमें कहा गया है कि 'सन्तमत मार्ग झीना है।' संतमत मार्ग जिसको कुछ लोग राधास्वामी मत भी कहते हैं यह कोई अलग धर्म या फिरका नहीं है, न ही राधास्वामी नाम उस व्यक्ति का नाम है जिसने इस मत को चलाया। मार्ग शब्द का अर्थ है योग। योग वह रास्ता है जो मनुष्य को मालिक से मिला देता है। कई युगों से सभी मत-मतान्तर, ऋषि-मुनि, संत, भक्त, लगातार उस मालिक की तलाश में लगे रहे हैं। खासकर भारत के अन्दर यह तलाश आदिकाल से चली आ रही है। अगर वेदों के काल को देखा जाये तो हज़ारों-लाखों साल पहले की वेद वाणियां हैं। वेदों के अन्दर जो विचार हैं, ज्ञान है उसको कहते हैं अनन्त / वेदा अनन्ताः। वेद अनन्त हैं। अनन्त का मतलब है कि कोई बता नहीं सकता कि कब से यह ज्ञान हुआ। आप जिस संस्कृति में रहते हैं उसे भारत की संस्कृति तथा आर्ष संस्कृति कहते हैं, ऋषियों की संस्कृति कहते हैं। प्राचीन संस्कृत के अन्दर भारतवर्ष ही एक ऐसा देश है जहाँ पर यह खोज की गई कि मैं कौन हूँ ? कहाँ से आया हूँ ? और कहाँ जा रहा हूँ ? आमलोग इस बात को भूल जाते हैं कि हम कहाँ से आये हैं ? क्यों आये हैं ? किधर जा रहे हैं ? जब इस बात का ज्ञान नहीं होता है तो दुःख होता है। हम यहाँ पर हैं, इस लोक के अन्दर रहते हैं। गृहस्थी हैं किसी शहर में रहते हैं, समाज में रहते हैं। यह सब समझते-२ यह कभी ध्यान नहीं आता कि यह सब क्या है ? जब तक किसी को आत्म-ज्ञान नहीं होता, अपने आपका ज्ञान नही होता तब तक चैन नहीं आ सकता। क्यों ! क्योंकि यह सच्चाई हमारे ऋषियों ने हज़ारों साल के तजुर्बों के बाद वेदों और

उपनिषदों में लिखी, लेकिन यह वेद, उपनिषद् संस्कृत भाषा में लिखे हैं। जो संस्कृत पढ़ना जानते हैं वह अभ्यास कर सकते हैं, इस सच्चाई को खोज करके उन्होंने किताबों में भी लिखा कि मैं कौन हूँ ? कहाँ से आया हूँ ? मेरी असलियत क्या है ? अब यह प्रश्न उठता है कि क्या मैं शरीर हूँ ? आम लोग समझ लेते हैं कि मेरा शरीर है। क्या मैं मन हूँ ? जो सूक्ष्म शरीर है मेरा। शरीर को चलाने वाला सूक्ष्म तत्त्व मन है, जिसमें विचार है, विचार की शक्ति है जो चलाती है। क्या मैं अहंकार हूँ ? क्या मैं आनन्दमय कोष वाली आत्मा हूँ ? जो मेरा शरीर प्रकाश का है। इस ज्ञान को समझने के लिए हमें ऐसे सद्गुरु को जरूरत है जो इस सच्चाई को जान गया है और जानने के बाद उसके जीवन से पता चलता है कि वह इस संसार में रहता हुआ, गृहस्थी होता हुआ, शहरी होता हुआ, एक नागरिक होता हुआ, एक समाज में रहता हुआ, एक राष्ट्र में रहता हुआ भी उसका ध्यान उस परमतत्त्व में लगा रहता है कि वह क्या है ? उसे पता चल जाता है उसका असली आपा जो है वह पूर्ण, अविनाशी, परमतत्त्व, स्वामीतत्त्व, फकीर-तत्त्व, कृष्णतत्त्व, कुछ भी कह लो, है। सर्दी में जब हमारे शरीर को ठण्ड लगती है तो ओवरकोट पहन लेते हैं, नीचे छोटा कोट पहनते हैं उसके नीचे स्वेटर पहन लेते हैं। शायद कम लोग ही ऐसा करते होंगे क्योंकि यहाँ इतनी सर्दी नहीं पड़ती है। मैं अमेरिका में 15-16 साल पढ़ाता रहा, वहाँ ठण्ड बहुत पड़ती है। वहां नवम्बर से बर्फ गिरनी शुरू हो जाती है। मैं जिस शहर में पढ़ाता था वहां इतनी सर्दी पड़ती थी कि तापमान जीरो से बीस डिग्री नीचे चला जाता था। यहाँ जीरो कभी भी नहीं होता। जीरो पर सब कुछ जम जाता है, यदि

तापमान ज़ीरो से नीचे चला जाये तो वाजेबक्त आपका खून भी जम जाये इसीलिए वहाँ कपड़े पहनने पड़ते हैं। मैं कुछ ज़रूरत से ज़्यादा ही पहनता था ओवरकोट भी पहन लेता था, उसके अन्दर कोट भी पहनता था फिर स्वेटर कमीज़, बनियान तो होती थी। कभी-२ ओवरकोट के ऊपर बरसाती भी पहन लेता था फिर तो मेरा शरीर मोटा-ताज़ा लगता था लेकिन उसमें फायदा यह होता था कि यदि बर्फ पर पाँव फिसल जाये तो चोट नहीं लगती थी। एक मिसाल दे रहा हूँ कि आदमी यह सब पहनता है जब घर में जायेगा तो घर में ज्यादा सर्दी नहीं होती। घर में कोट उतार दिया, स्वेटर, कमीज़ उतार दी। ओवरकोट उतारने के बाद भी मैं हूँ, कोट उतारने के बाद भी मैं हूँ, स्वेटर उतारने के बाद भी मैं हूँ। जिस तरह हम शरीर पर आवरण चढ़ते हैं उसी प्रकार हम उस अविनाशी, अनन्त, परमतत्त्व से आये हैं। हम उस मालिक के अंश हैं। यह सारा जगत् उसकी एक धारा है। आधार से एक धार आती है और सारा जगत् बना देती है उसमें यह सब है—भूर्, भुवः, स्वः, महः, जनः, तपः के दर्जे या आवरण, उसकी एक धार ने यह सब बनाये। वह अपने आप में गुप्त है। उसमें अपने आप में सब शक्तियाँ मौजूद है। उसने एक धारा से जगत् के अनेक खण्ड एव मण्डलाकार बना दिये। 'मण्डलाकारम्'। यह मण्डल है। तपः के मण्डल से हमारी आत्मा अंश रूप से निकलती है। जना में आकर के उसने अहंकार का एक और रूप धारण किया, उसके अन्दर एक और शक्ति पैदा हो गई। हमारा असली रूप अविनाशी है, उसका एक अंशमात्र नीचे उतरता है तब उस पर आवरण चढ़ाया जाता है। आनन्दमय-कोष चढ़ा, विज्ञानमय-कोष

चढ़ा, मनोमय-कोष चढ़ा, प्राणमय-कोष चढ़ा। प्राणमय-कोष हमारा सूक्ष्म शरीर है जो प्राण की शक्ति से बना हुआ है। सारा जगत् भी प्राणमय है। स्थूल शरीर भी पाँच तत्व का बना है—पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि, आकाश। ये सभी हमारे आवरण हैं। इसमें जब हमारी विशुद्ध-आत्मा जिसे संत लोग सुरत कहते हैं, आती है और वह जिस आवरण में रहती है तो वह समझती है कि मैं ये ही हूँ। जब आपका ध्यान यह रहता है कि मैं तो शरीर हूँ तब आपको शरीर का दुःख-सुख होता है। शरीर, मन, आत्मा यह तीन हैं, जिन में आप शरीर को ही अनुभव करते हैं कि मैं यह हूँ। यदि किसी ने आपको थप्पड़ मार दिया तो आप फ़ौरन ही उसको मुक्का मार देंगे। जाग्रत अवस्था में ही शरीर का अनुभव होता है। जाग्रत अवस्था में ठोस चीज़ें हमारे सामने हैं; स्थूल पुरुष बैठे हैं, स्थूल खाद्य पदार्थ हैं, खाते हैं, पीते हैं स्थूल रूप से यह हमसे अलग़ हैं। इसलिए हमें दुःख होता है। किसी ने हमारी बदनामी कर दी हम कहते हैं कि यह हमारा शत्रु है, किसी ने खुशामद कर दी तो हम कहते हैं कि यह हमारा मित्र है, लेकिन यह सब जाग्रत अवस्था में है। यदि आप यहाँ से छलांग लगा दें तो आपकी टाँग टूट जायेगी लेकिन जब आप जाग्रत की अवस्था से स्वप्न में जाते हैं तो वह मन की आधी चेतना की अवस्था होती है। जब आप स्वप्न में होते हैं उस वक़्त आपके शरीर के अंग बाहर काम नहीं कर रहे होते हैं न कोई बाहरी चीज़ आपके सामने होती है, न आपके सामने पूड़ी है, न सब्ज़ी है लेकिन आप खा रहे हैं। अगर आप शरीर होते तो आपका खाने का अनुभव अन्दर कैसे होता। इसका मतलब है कि जब शरीर का हिस्सा काम नहीं कर रहा है तो कोई और चीज़ काम

कर रही है। वह सूक्ष्म शरीर काम कर रहा है। इसी सूक्ष्म शरीर को सन्तों ने कहा है कि मन ठहर गया है। हमारे दूसरे शास्त्र इसको तीन हिस्सों में बाँटते हैं। वह कहते हैं कि सूक्ष्म शरीर क्या होता है? सूक्ष्म शरीर में प्राणमय-कोष होता है, मनोमय-कोष होता है, विज्ञानमय-कोष होता है वह भी ठीक कहते हैं। पृथ्वी का स्थूल शरीर है पृथ्वी, उस के आगे जो वायुमंडल हैं वह प्राणमय-कोष है। पृथ्वी के बाद चन्द्रमा है। चन्द्रमा जिस मण्डल को बनाता है, परिक्रमा करता है, वह मनोमय-कोष है जो इसी पृथ्वी के साथ जुड़ा हुआ है। आज का विज्ञान तो अब पहुँचेगा लेकिन हमारे ऋषियों ने पहले ही बता दिया था। इसी प्रकार चन्द्र के आगे सूर्य का मंडल है जो चारों तरफ घूमता है, मण्डल बनाता है और वृत्त बनाता है, वह पृथ्वी की बुद्धि है। पृथ्वी जैसे दूसरे ग्रह भी हैं जैसे मंगल, शुक्र इत्यादि। इसके बाद विज्ञानमय-कोष आता है। सूर्य हमें सारी शक्ति देता है। सूर्य की शक्ति से ही यह सारी पृथ्वी, मंगल, शुक्र, शनि सब चल रहे हैं। यदि सूर्य की शक्ति न हो तो पृथ्वी पर कोई भी प्राणी जीवित नहीं रह सकता है। सूर्य का मंडल हमारी पृथ्वी की बुद्धि है, विज्ञानमय है। इसी प्रकार से इन तीनों को मिला करके हमारा शरीर है। उसके बाद प्राणमय-कोष आता है। प्राणमय कोष क्या है? वह वायु मण्डल का वायु जैसा शरीर है। आज साईन्स इस बात को मान रही है कि वायु के शरीर को ही प्राणमय-कोष कहते हैं Actual body उसके बीच में मनोमय-कोष होता है और उसके बीच में विज्ञान-बुद्धि का कोष होता है। सूक्ष्म शरीर क्या है? इन तीनों को एक मान लिया गया है आपका जैसा सूक्ष्म शरीर होता है वैसा का वैसा ही आपका स्थूल शरीर होता है। सूक्ष्म

शरीर इस शरीर से जुड़ा हुआ अवश्य है लेकिन इस शरीर से उसकी बनावट अलग है और इतनी सूक्ष्म है कि उस शरीर को बनाने वाले कण हैं, Atom हैं। हम इस Atom से भौतिक जगत् में कण देखते हैं लेकिन Atom को हम आँखों से नहीं देख सकते हैं। वह बहुत झीना तथा बहुत छोटा होता है। सूर्य की रोशनी में ज़र्रे दिखाई देते हैं, छोटे-२ टुकड़े चलते हैं, उन टुकड़ों के अन्दर भी करोड़ों Atom, अणु होते हैं। उस कण का करोड़वां हिस्सा भौतिक है तथा हमारा स्थूल Atom है लेकिन हमारा सूक्ष्म शरीर जिस तत्त्व का बना है वह उससे हज़ारों दर्जे झीना है इसी लिए हम उसे देख नहीं सकते हैं। जब आदमी मर जाता है तो कहते हैं कि शरीर छोड़ गया लेकिन होता क्या है? कि उसका सूक्ष्म शरीर ऐसा का ऐसा ही बाहर निकल जाता है और उस शरीर में रहते हुए प्रत्येक व्यक्ति को तीन दिन तक सूक्ष्म दर्जे पर रहना पड़ता है उस व्यक्ति को यह नहीं पता होता कि मैं मरा हूँ क्योंकि वह सुनता भी है, देखता भी है परन्तु चख नहीं सकता क्योंकि शरीर के तन्तु नहीं हैं हालाँकि मानसिक दृष्टि से जब तक वह शरीर से सम्बन्धित रहता है ऐसे रहता है जैसे स्वप्न में खाता भी है और चखता भी है। सूक्ष्म शरीर जिस पदार्थ का बना है उस पदार्थ को साईन्स ने प्रोटोप्लाज़्म कहा है। जब आप सोते हैं तो सूक्ष्म शरीर बाहर निकल जाता है तब आप घूमते हैं, तैरते हैं, पहाड़ों की चोटी ले छलाँग लगाते हैं लेकिन आपको दुःख नहीं होता क्योंकि आप मनोमय-कोष हैं। जब यह सूक्ष्म शरीर बाहर जाता है तब उसके साथ एक सूत्र आत्मा चाँदी की तरह की तरह होती है जो आपके प्राण की शक्ति के साथ जुड़ी रहती है। स्वप्न

मैं सूक्ष्म शरीर काम कर रहा होता है स्थूल शरीर काम नहीं कर रहा होता है। स्वप्न में आप लोग छलांग लगाते हैं आपको कुछ नहीं होता लेकिन जाग्रत अवस्था में आपकी टाँग टूट जायेगी। वास्तव में सूक्ष्म शरीर अस्तित्व रखता है और उसकी फोटो ली जा सकती है। एक नई फोटोग्राफी निकली है जिसे किर्लियन (Kirlian) फोटोग्राफी कहते हैं। अमेरिका, इंग्लैंड तथा रूस में मनुष्य के विचारों की फोटो ली जा रही है। यह धर्मवीर है यदि इसके दिमाग में ताजमहल का ख्याल हो और उस कैमरे से फोटो ली जाये तो धर्मवीर के सिर के ऊपर ताजमहल की फोटो आ जायेगी। यह साईन्स बता रही है। इसी प्रकार यह सूक्ष्म शरीर है। जब किसी की टाँग कट जाती है तो कहते हैं कि यह जुड़ेगी नहीं क्योंकि डाक्टरों ने स्थल शरीर को काटा है लेकिन मरीज़ कटी हुई टाँग के हिस्से में भी दर्द महसूस करता रहता है। जब कभी आप स्वप्न में सफर पर जाते हैं तो आप थकान महसूस करते हैं क्योंकि आप सूक्ष्म शरीर से गये थे। सूक्ष्म शरीर के साथ मन भी है, बुद्धि भी है। हम स्वप्न के अन्दर मनोमय-कोष हैं, मानसिक तत्त्व हैं, मानसिक चीज़ें हैं। लड्डू है, खाते हैं उस वक्त लगता है कि हम खा रहे हैं इसके बाद जब आप गहरी नींद में चले जाते हैं उस समय स्वप्न नहीं होता है। जाग्रत की अवस्था में लगता है कि यह आदमी मुझे मारने आ रहा है लेकिन स्वप्न में डण्डा पास है परन्तु लगता नहीं है। जाग्रत से तो सोने की हालत अच्छी हुई, तकलीफ कम हुई लेकिन मानसिक दृष्टि से वही रहता है। जब गहरी नींद में सो जाते हैं तो उस समय हमारा स्वप्न शरीर भी सो जाता है, मन भी सो जाता है। स्वप्न में सभी ज्ञानेन्द्रियाँ सो जाती हैं। यदि आप मन होते

तो स्वप्न देखते। सुषुप्ति में गहरी नींद नही आती है तो क्या होता है ? न कोई शत्रु है, न कोई मित्र है। गहरी नींद में कौन-सा शरीर कार्य कर रहा होता है ? यह आपको बताना चाहता हूँ। आप कई बार नई जगह जाते हैं वहाँ सोये ! जब जागे तो आप कहते हैं कि कल रात तो मझे इतना आनन्द आया, इतना सोया कि दस साल तक इतनी गहरी नींद कभी नहीं सोया। अब बताओ, जब आप गहरी नींद में सो रहे थे और गहरी नींद में न स्वप्न आता है और न याद आती है और न आप कुछ कर रहे थे लेकिन इस अचेतन हालत में वह कौन-सी चीज़ ऐसी थी जो जाग रही थी और जिसके आधार पर आप कहते हैं कि आपने दस साल तक ऐसा आनन्द महसस नहीं किया। नींद के अन्दर आपको क्या अनुभव मिलता है ? आनन्द का अनुभव मिलता है। गहरी नींद के अन्दर हमारा सूक्ष्म शरीर काम नहीं कर रहा होता है क्योंकि हमारा कारण शरीर जिसे आत्मा कहते हैं, विशुद्ध आत्मा से परे, आत्मा काम कर रही होती है। उसमें क्या अनुभव हुआ ? कि गहरी नींद में सिर्फ आनन्द का अनुभव हुआ। इसलिए आत्मा जो हमारा कारण शरीर है आनन्दमय-कोष कहलाता है, यह अनुभव आप रोज़ करते हैं। ये तीनों हमारे अवयव हैं, तीनों हिस्से हैं लेकिन इन तीनों से परे भी कोई चीज़ है, वह चीज़ अपने आप में पूर्ण है, अविनाशी है। इसलिए ऋषियों ने अनुभव करने के बाद कहा—

ओम् पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात् पूर्णमु दच्यते ।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते ॥

परमतत्त्व अपने आप में पूर्ण है। मनुष्य की आत्मा पूर्ण से पैदा होने के कारण अपने आप में पूर्ण है। जब व्यक्ति

अपनी आत्मा को जान लेता है तो उसे परमतत्त्व का ज्ञान हो जाता है।

जहाँ से यह सत्-चित् आनन्द निकले हैं वही परमतत्त्व है। यहा तीनों शक्तियाँ ब्रह्मा, विष्णु, शिव भी कहलाती हैं। ब्रह्मा स्थूल जगत् को बनाने वाले हैं, विष्णु स्थूल जगत् का पालन करने वाले हैं, विष्णु ही ब्रह्माण्डी मन कहलाता है। शिव ब्रह्माण्ड का कारण शरीर है जो प्रकाशमय, ज्योतिर्मय, परमतत्त्व का अंग है। वह सारे जगत् के अन्दर प्रकाश कर रहे हैं, प्रकाशमय, ज्योतिर्मय है। ये तीनों चीजें आपके अन्दर हैं। आपका शरीर ब्रह्मा है यदि आप मालिक को ढूँढना चाहें तो मनुष्य के अन्दर सब चीजें मौजूद हैं। आपने गीता में पढ़ा होगा, तस्वीरें भी देखी होंगी कि कृष्ण ने अर्जुन को विराट् रूप दिखाया था। उस विराट् रूप में अनेक लोक-लोकान्तर हैं, हजारों भुजाएँ तथा हजारों मुँह हैं और उसके अन्दर लोक-लोकान्तर आ रहे हैं, जा रहे हैं। अनेक पृथ्वियाँ, अनेक सौरमण्डल, अनेक आकाश गंगाएँ हैं। यह जो सारा भौतिक जगत् है वह उस परमतत्त्व मालिक का शरीर है। आपका भी शरीर है आपके शरीर के अन्दर देवी-देवता सब कुछ मौजूद हैं इसीलिए जो लोग समाधि-ध्यान लगाते हैं वह कहते हैं कि हमें सितारे दिखाई देते हैं, हमें सौरमण्डल दिखाई दे रहा है। हम सत्तलोक जाते हैं वहाँ पर ऐसे वृक्ष हैं जिनके पत्ते और फल सूर्य हैं, चन्द्र हैं, अनेक तारे हैं। वास्तव में उनको यह सारा ब्रह्माण्ड दिखाई दे रहा है। जो कुछ यहाँ है वह वहाँ है, जो वहाँ है वह यहाँ है :—

जाको दर्शन इत्त है, वा को दर्शन उत्त।
जाको दर्शन इत्त नहीं, वा को उत्त न इत्त॥

यह जो हमारा ब्रह्माण्ड है यह ब्रह्मा है वह सूर्यमण्डल

है इसके पीछे विष्णु तत्त्व है जो कोटि-२ ब्रह्माण्ड को चलाने वाली ताकत है। एक आकाशगंगा नहीं है बल्कि हजारों-करोड़ों गंगाएँ हैं। यह जो आपका धर्म है जिसे लोग हिन्दु-धर्म कहते हैं, वास्तव में यह सत्त सनातन धर्म है। सनातन वह है जो आदिकाल से चला आ रहा है और आगे चलेगा। जितनी खोज इस धर्म ने की उतनी खोज किसी और धर्म या संस्कृति ने नहीं की। तीसरा हमारा आत्म-तत्त्व या कारण शरीर और प्रकाश है। यदि हम वास्तव में मनुष्य या ईश्वर को देखना चाहते हैं तो हमें मनुष्य के रूप को समझना चाहिए। जिस तरह ईश्वर में ब्रह्मा, विष्णु, और शिव तत्त्व है, उसी तरह मनुष्य में शरीर, मन, आत्मा तीन तत्त्व है। यह आज का विज्ञान बता रहा है कि कई बीमारियाँ क्रोध के कारण होती हैं। एक रोज़ एक औरत बच्ची को दूध पिला रही थी, उसका पति आया उसने पति पर क्रोध किया और इतना क्रोध किया कि उसका दूध अन्दर से ज़हर हो गया और दूध पीती हुई बच्ची दूध पीकर मर गई। इसलिए हमें क्रोध के वचन नहीं बोलने चाहिए, मीठे वचन बोलने से आपका शरीर भी स्वस्थ रहेगा तथा मन भी स्वस्थ रहेगा। आप कहीं काम करते हैं आपके नीचे सात-आठ नौकर हैं, आप कहेंगे कि ज़ोर से मत बोलो, चिल्लाओ नहीं तो वह काम नहीं करेंगे, शायद आपका कहना भी न मानें। मैं विश्वविद्यालय में छात्रों का डीन रहा हूं पर मैंने किसी से कटुवचन नहीं कहे। कभी-२ कटुवचन बोलना पड़ता है मगर मैं तो बोला नहीं। यदि आपको एक्टिंग दिखाने के लिए किसी पर क्रोध करना भी हो तो करो लेकिन मन से उसे दुआ दो, उसे पता नहीं चले कि मन से आप उसका भला चाहते हैं। यदि मन से आप

किसी का बुरा नहीं चाहते हैं तो आपका मन शुद्ध हो जायेगा यह असली नाम है। झीना मार्ग इसीलिए है कि यह श्रेयस् का मार्ग है। जीवन निर्वाह के दो मार्ग होते हैं—(1) प्रेयस् मार्ग (2) श्रेयस् मार्ग। प्रेयस् मार्ग वह मार्ग है कि सहज में आपको जो कुछ अच्छा लगता है वही कर लेते हैं, आपको भूख लगी आप एक सेर भल्ले-पकौड़ी खा गये लेकिन इससे मनुष्य बीमार पड़ जाता है। प्रेयस् का मार्ग यही होता है कि जो अच्छा लगता है वही कर लो। आपको किसी ने गाली दे दी आपने उसे गाली दे दी किसी ने क्रोध कर दिया आप समझेंगे कि मैंने क्रोध का बदला ले लिया लेकिन आपको एक दिन पश्चाताप करना पड़ेगा। श्रेयस् मार्ग वह मार्ग है कि जो व्यक्ति आपसे नफरत करे आप उससे प्रेम करो, लगातार ऐसा करते चले जाओ। यदि आप हार गये तो वह जीत जायेगा आप आगे नहीं जा सकते इसीलिए यह झोना मार्ग है। पहले तो लगता है कि हमें कठिनाई हो रही है लेकिन बाद में आपके अन्दर वह ताक़त आ जाती है कि आप जहाँ जाओगे वहाँ आप पर प्रेम बढ़ेगा, दया बढ़ेगी, हजारों लोगों को फायदा पहुँचेगा। मनुष्य ही नहीं बल्कि पशु-पक्षियों को भी फायदा पहुँचेगा। जिससे सच्चा प्रेम होता है उसको नुक्सान नहीं पहुँचाया जा सकता है। यदि हम किसी को सच्चे दिल से प्रेम करते हैं तो क्रोध का सवाल ही नहीं उठता है। क्रोध करने से, ईर्ष्या करने से, किसी की बदनामी करने से किसी को बुरा कह देने से कहने वाले का मन बुरा हो गया, वह तो गिर गया मगर आपका भला हो गया। मैं आपको एक अनुभव बता रहा हूँ। आपके चारों तरफ एक रक्षा का कवच निर्मित हो जाता है और आपकी हानि नहीं होगी। एक ऐसा आभामण्डल बन जाता है कि मान लो पीठ पीछे

जो लोग आपकी बदनामी कर रहे हैं जब आप उनके सामने जाओगे तो वह बदल जायेंगे, आपसे प्रेम करने लगेंगे। मैंने बहुत-सी स्थितियों में देखा है। एक बार मैं अमेरिका में पढ़ा रहा था, मुझे एक महीने के लिए पढ़ाना था। बर्मिघम विश्वविद्यालय में था, वहाँ से 80 मील दूर एक दूसरा शहर था स्याटो। वहाँ मेरे एक अमेरिकन मित्र जोर्ज जाइन, उनकी पत्नी मेरी जाइन और उनकी पुत्री ऐन जाइन रहते थे। उनकी पुत्री ऐन मेरी छात्रा थी उसके माता-पिता बहुत अच्छे थे। मैं शुक्रवार को शाम को फारिग हो जाता था। अकेला रहता था इसलिए शुक्रवार को शाम को ही स्याटो चला जाता था। जब वहाँ जाता था तो दो दिन सत्संग होता था। सोमवार को प्रातः वहाँ से चला आता था। मेरी जाइन मुझे बस अड्डे तक छोड़ने आती थी। एक बार उसने कहा डा० शर्मा आज मैं आपको छोड़ने नहीं जा सकती क्योंकि मेरे घर में नल खराब हो रहा है, पता नहीं नल बनाने वाले कब आ जायें? क्या आप खुद जा सकते हैं? मैंने कहा रास्ता जानता हूँ खुद चला जाऊंगा, वह फाटक तक मुझे छोड़ने आई फाटक के साथ-२ वहाँ पटरी थी यानि कि साइड बोर्ड बना हुआ था, मैं उस रास्ते पर चला। कोई 5-6 कदम ही चला होऊँगा कि मेरी ने चिल्लाकर कहा कि डा० शर्मा ध्यान रखना यह पड़ौसी का कुत्ता बड़ा खतरनाक है। पड़ोसी का कुत्ता खुला था कुत्ता छलांग मार कर बाहर आ गया। मैं चलता जा रहा था वह लपककर आगे आ रहा था। मैंने इतना बड़ा कुत्ता पहले कभी नहीं देखा था, वह गधे जितना बड़ा था, उसे शीप डाग कहते हैं। कुत्ता गुर्राता हुआ, चिल्लाता हुआ मेरी तरफ आया। मैं बिल्कुल डरा नहीं। मैंने उससे प्यार से कहा

प्यारे कुत्ते आ जा, आ जा। उस पर मेरे विचार का ऐसा असर हुआ कि मेरे पास गुर्राता हुआ आया परन्तु नज़दीक आकर सूंघा और चला गया। यदि प्रेम की भावना का एक कुत्ते पर असर हो सकता है तो क्या आदमी पर नहीं हो सकता है ? यदि आप इस प्रकार अपने मन में शिव-संकल्प रखें और सबके साथ प्रेम का व्यवहार करें तो आपका जीवन सफ़ल हो जायेगा आप आज से ही इस सच्चाई पर अमल करना शुरू कर दें। आप एक महीने में देखेंगे कि सब लोग आपकी बात मानने को तैयार हो जायेंगे और आपका मन भी शुद्ध हो जायेगा तब आप इस झीने मार्ग पर सरलता से चल सकेंगे। यह श्रेयस् का मार्ग पहले ज़रूर झीना है लेकिन बाद में इतना सहज हो जाता है कि कुछ भी नहीं करना पड़ता है। उस वक्त ऐसी दशा हो जाती है कि यह दोहा सच्चा साबित हो जाता है :—

माला फेरूँ न हर भजूँ, मुख से कहूँ न राम।
मेरा राम मुझ को भजे, तब पाऊँ विश्राम ॥

यह है सन्तमत का मतलब, यही सनातन धर्म है, यही मानव का धर्म है, इसी को आप सत्यता का धर्म कह सकते हैं। यही सहज मार्ग है। आज मैं यही बताना चाहता था। राधास्वामी का मतलब यही है। राधा का मतलब आत्मा स्वामी का मतलब परमात्मा। जब आप आत्मा-परमात्मा को पहचान लेते हैं, उससे एक हो जाते हैं, जीवनमुक्त हो जाते हैं तब आप राधास्वामी हैं। राधास्वामी कोई फिरका नहीं है। राधास्वामी किसी का नाम नहीं है। वह एक हालत है और उसी हालत पर पहुँचने को ही नाम कहा जा सकता है। सुमिरन का मतलब भी यही है कि मनुष्य हमेशा इसी हालत में रहे किसी से नफरत न करे। यूँ तो

राधास्वामी नाम लेने से भी मन राधास्वामी की हालत पर पहुँच जाता है लेकिन यह तभी सम्भव हो सकता है जब हम राधा और स्वामी दोनों शब्दों के अर्थ को समझते हों और अपने आप में आत्मा और परमात्मा को, सुरत और शब्द को एक करके जीवन्मुक्ति का अनुभव भी करते हों। इसी अनुभव की हालत को नामदान कहा जाता है। सद्गुरु का सत्संग आपको इसी हालत पर ले जा सकता है इसलिए सुमिरन, ध्यान और भजन की विधि बताई जाती है। सुमिरन, ध्यान, भजन करना चाहिए लेकिन ऐसा करने से पहले मन को शुद्ध करने के लिए प्रेमभाव को जीवन में अपनाना जरूरी है। इसलिए मैंने एक राधास्वामी मन्त्र लिखा है। उसके अन्दर आपके मानवता धर्म का मतलब आ जायेगा, सनातन धर्म का मतलब भी आ जायेगा।

इन शब्दों के साथ मैं आपको सच्चे दिल से सद्भावना देता हूँ आप सुखी रहें, आपको आनन्द मिले, आपके कार्य पूरे हों और आप सच्चाई और प्रेम के रास्ते पर चलकर इस लोक और परलोक दोनों को सुधारें।

सभी को राधास्वामी!

# मासिक सन्देश

ब्लूमिंगटन, इण्डियाना
संयुक्त राज्य अमेरिका

मेरे प्यारे सत्संगियो :

राधास्वामी ; परम दयाल जी सहाई !

मैं आपको यह सन्देश इण्डियाना प्रान्त के ब्लूमिंगटन नगर से भेज रहा हूँ। यहाँ पर हम अपने छोटे लड़के प्रियदर्शी के पास तीन दिन के लिए आए हुए हैं। प्रियदर्शी यहाँ पर विख्यात इण्डियाना विश्वविद्यालय में पी० एच्० डी० की उपाधि लेने के लिए पढ़ रहा है तथा पढ़ा भी रहा है। परम दयाल जी महाराज प्रियदर्शी से बहुत ही प्यार करते थे और उन्होंने कई बार उसके सिर पर हाथ रख कर आशीर्वाद दिया था।

यहाँ पर हम कुछ छात्रों तथा प्रोफेसरों से मिले। मैंने कुछ ऐसे विद्वानों को मानवता धर्म सम्बन्धी साहित्य दिया, जो रूहानियत में रुचि रखते हैं। इण्डियाना विश्वविद्यालय में विश्व भर के देशों से प्रोफ़ेसर और छात्र, विज्ञान, मानवता शास्त्र, दर्शन-शास्त्र और कृषि-शास्त्र के विषयों का अध्ययन तथा खोज करने के लिए आते हैं। भारत में जिस मानवता अन्तर्राष्ट्रीय विश्वविद्यालय की स्थापना का विचार किया जा रहा है, उसका कार्यक्रम इसी इण्डियाना विश्वविद्यालय से मिलता-जुलता होगा।

मैं २७ मई से ले कर ७ जून तक फ़लोरीडा का दौरा कर चुका हूँ। हम २७ मई को हमिल्टन कैनेडा में श्री नन्द सिहरा के सुपुत्र चरणजीत के ब्याह में शामिल होने के फौरन बाद बफलो-न्यूयार्क के हवाई अड्डे से फ़लोरीडा के लिए रवाना हुए। सिहरा परिवार परम दयाल जी महाराज का भक्त है, इसलिए मैं एक ही महीने में दो बार उनके घर गया।

हमें अपनी कार को बफ़लो के हवाई अड्डे पर दस दिन के लिए छोड़ जाना पड़ा, क्योंकि मैं क्लीवलैण्ड से कैनेडा में अपनी कार चला कर आया था और बफ़लो से क्लीवलैण्ड हमें वापिस अपनी ही कार पर चला जाना था। मैं यह सब इसलिए बता रहा हूँ, ताकि मेरे प्यारे भारत में रहने वाले सत्संगियों को यह मालूम हो जाये कि अमेरिका, कैनेडा तथा पश्चिमीय देशों में खुद ही कार चलानी पड़ती है चाहे आदमी अमीर हो या गरीब, बड़ा अफ़सर हो या साधारण व्यक्ति, चाहे वह सन्त महात्मा हो या सत्संगी। यहाँ पर मेहनत की इज्ज़त होती है। इस प्रकार का कर्मठ जीवन कर्मयोग के असूलों के मुताबिक है। सन्तमत तो खासकर आदेश देता है कि हर एक व्यक्ति को जीवन्मुक्ति के लिए अपने कर्म में लगा रहना चाहिए। उस सहज समाधि को प्राप्त करने के लिए, जिसके बारे में कबीर साहिब ने लिखा है कि हर एक व्यक्ति को लगातार गृहस्थ जीवन के कर्त्तव्यों को निभाना चाहिए। रूहानियत की इस ऊँची हालत पर पहुँचने के लिए और अपने आपे का सच्चा ज्ञान प्राप्त करने के लिए घर छोड़ कर सन्यासी बनने की ज़रूरत नहीं है।

आप में से बहुत से सत्संगी भाई और बहनें शायद

परमदयाल जी महाराज जब भी अमेरिका आते थे, मैं सैंकड़ों मीलों तक उनको खुद ही गाड़ी चला कर ले जाता था। उन्हें वर्जीनिया, ओहायो, कैनेडा तथा न्यूयार्क में सत्संगों के लिए कार में जाना अच्छा लगता था। मुझे याद आता है कि किस तरह वह थोड़े ही दिनों में अमेरिका की तेज चलने वाली सभ्यता से घुल-मिल जाते थे। कई बार जब मैं उनके आराम के लिए कार को ६० के बजाय ५० कि. मी. प्रति घण्टा की रफ्तार से चलाता तो परमदयाल जी कहते, "तुम गाड़ी को धीरे क्यों चला रहे हो?" मेरे यह कहने पर कि मैं उनके आराम के लिए ही गति सीमा से १० मील कम रफ्तार पर कार चला रहा था, तो इस पर वह कहते, "तुम गति सीमा के अन्दर-२ गाड़ी तेज चलाओ।" मुझे हैरानी होती थी कि भारत में तो परमदयाल जी महाराज कार में यहां के मुकाबले में बहुत मन्दगति से सफ़र करते थे, किन्तु अमेरिका में आकर उनका व्यवहार इस देश के अनुसार हो जाता था। सत्य तो यह है कि सद्गुरु, सत्पुरुष किसी एक प्रान्त, देश, एक जाति या एक विशेष धर्म का बन कर नहीं रहता। ऐसा परम गुरु तो मानवमात्र को बिना किसी भेद-भाव के एक समझता हुआ परमधाम की ओर ले जाता है।

पिछले महीने में मैंने आपको वचन दिया था कि मैं 'सुरत-शब्द योग' के दूसरे सोपान की व्याख्या करूंगा। यह सोपान 'सद्गुरु को अपनाना' है। सत्संग की महिमा की चर्चा करते हुए मैंने यह बताया था कि कोई भी व्यक्ति सत्संग के बिना जीवन के परम लक्ष्य, जीवन्मुक्ति को प्राप्त नहीं कर सकता। सत्संग केवल वही सद्गुरु ही दे सकता है, जिसने खुद सहज-समाधि की पूर्ण हालत को

प्राप्त कर लिया हो। क्योंकि ऐसा सद्गुरु जगत् कल्याण के लिए, सारी मानव जाति के लिए अवतरित होता है, इसलिए उसका सत्संग हर समय, हर रोज, हर स्थान पर सबके लिए सुलभ हो सकता है। सन्त तुलसी दास जी ने सद्गुरु के सत्संग की इस महिमा को इस प्रकार बताया है :—

"सब ही सुलभ सब दिन सब देसा।
सेवत सादर समन कलेसा ।।

अर्थात् सद्गुरु का सत्संग हर एक व्यक्ति को हर रोज, हर स्थान पर (हर देश में) आसानी से मिल सकता है। कोई सत्संगी आदर के साथ सद्गुरु से सत्संग सुनता है तो उसके सभी क्लेश दूर हो आते हैं। सद्गुरु के इसी कर्तव्य को निभाने के लिए परमदयाल जी वृद्ध अवस्था में भी देश-विदेश का दौरा करते थे।

सद्गुरु वक्त मनुष्य के रूप में पृथ्वी पर अवतरित होता है। हर एक व्यक्ति, जो सद्गुरु के सम्पर्क में आता है और उसके आदेश पर चलता है, निज धाम को पहुँच सकता है। ऐसे सद्गुरु को ही अवतार कहा जाता है। परमदयाल जी के सद्गुरु दाता दयाल जी महाराज ने स्वयं परमदयाल जी को परमतत्त्व का अवतार बताया था। एक सद्गुरु ही दूसरे सद्गुरु को खोज कर उसे चिता सकता है कि उसके जीवन का उद्देश्य जगत् कल्याण है। दाता दयाल जी महाराज ने परमदयाल जी महाराज को सम्बोधित करते हुए लिखा है :—

'तू तो आया नट देही में धर फकीर का भेसा।
दुःखी जीव को संग लगा कर ले जा गुरु के देसा ।।
तीन ताप से जीव दुःखी हैं, निबल, अबल अज्ञानी।
तेरा काम दया का भाई, नाम दान दे दानी ।।

मुझे यह मालूम है कि आपने इन पंक्तियों को कई बार पढ़ा है और मेरे से तथा परमदयाल जी महाराज से सुना भी है, किन्तु इन पंक्तियों का समझना सद्गुरु के महत्त्व को जानने के लिए बहुत ही जरूरी है। इन पंक्तियों का सीधा-सादा मतलब यह है, "तुम फ़कीर के भेष में मनुष्य के चोले में इस पृथ्वी पर अवतरित हुए हो। तुम दुःखी जीवों को गले से लगा कर उन्हें गुरु एवं परमतत्त्व के देश में ले जाओ। इस जगत् में जीव तीन प्रकार के क्लेशों से पीड़ित हैं, वे हैं शारीरिक क्लेश या रोग, मानसिक शोक तथा आत्मा का अज्ञान (जिस के कारण मनुष्य को मृत्यु के भय का क्लेश रहता है)। तुम्हारे जीवन का उद्देश्य इन सब जीवों पर दया करना और सच्चा नाम दान देना है।" दाता दयाल जी के ये शब्द, "तुम फ़कीर का भेष धारण करके मनुष्य के चोले में आए हो" इस बात को स्पष्ट करते हैं कि फकीर बाबा इस जन्म से पहले मनुष्य के चोले से नहीं, अपितु परमधाम से अवतरित हुए थे। फ़कीर बाबा के इस अवतरण का खास मतलब, उस भेद का खोलना था, जिसके कारण हजारों सालों से मानव जाति अनेक धर्मों और मत-मतान्तरों में टुकड़े-२ हो गई। उनके इस मकसद की व्याख्या आगे चल कर दी जायेगी।

यहाँ पर मैं आपको यह बताना चाहता हूँ कि सद्गुरु के आने का मुख्य उद्देश्य मानवता को बचाने के लिए अपनी दया को बहा देना होता है। आप सद्गुरु को उसकी अपार दया से पहचान सकते हैं। इसलिए ही दाता दयाल जी ने कहा है कि फ़कीर बाबा के अवतरित होने का असली मकसद लोगों पर दया करना था और उसकी पूर्ति का एकमात्र साधन दुःखी मानवमात्र को सत्यता एवं पूर्ण मानवता का

नाम दान देना था। नाम दान के गूढ़ अर्थ की व्याख्या आगे चल कर की जायेगी, यहाँ पर इसके सम्बन्ध में थोड़ी-सी व्याख्या करना चाहूंगा। 'नाम दान' का असली मतलब शिष्य को आत्मा के सच्चे स्वरूप का ऊँचे से ऊँचा ज्ञान देना है। यह ज्ञान उस ऊँची से ऊँची अवस्था को प्राप्त करना है, जिस पर पहुँच कर व्यक्ति निर्भय हो जाता है और अपने आपे के उस अंश में टिक जाता है, जो अविनाशी है, अनन्त है और निश्चित है। मनुष्य इस हालत पर केवल उस समय ही पहुँच सकता है जब सद्गुरु सत्संगी के उन सभी भ्रमों को दूर करके कई जन्मों के कारण उसके एकत्रित अज्ञान को हटा देता है। सद्गुरु के सत्संग से अज्ञान का अन्धकार इस तरह छिन्न-भिन्न हो जाता है जैसे सूर्य के प्रकाश से बादल बिखर जाते हैं। सन्त तुलसी दास ने इसी विचार को प्रकट करते हुए लिखा है :—

वन्दौं गुरु पदकंज, कृपा सिन्धु नर रूप हरि।
महा मोह तम पुंज जासु वचन रवि कर निकर॥

अर्थात् "मैं उस परम गुरु के कमलरूपी चरणों को नमस्कार करता हूँ, जिसने अपनी अपार कृपा से मनुष्य का रूप धारण किया है और जिसके वचनरूपी प्रकाश से अज्ञान का गहन अन्धकार, उसी तरह छिन्न-भिन्न हो जाता है, जिस प्रकार सूर्य के प्रचण्ड प्रकाश से काली घटा का अन्धकार हट जाता है।"

एक पूर्ण गुरु क्या करता है? उसकी अपार दया क्या है? उसके कमलरूपी चरणों का क्या अर्थ है? इन सभी प्रश्नों का उत्तर खोलकर देना चाहिए। परमदयाल जी महाराज ने परम गुरु, सद्गुरु का मतलब समझाने में अपनी सारी ज़िन्दगी लगा दी। यह बहुत ज़रूरी है कि इसकी

चर्चा 'मानव मन्दिर' के अगले अंकों में की जाय।

यहाँ पर मैं आपको फ्लोरिडा के दौरे के बारे में कुछ संक्षेप में बताना चाहता हूँ। इस बार फ्लोरिडा में तीन जनरल सत्संग तथा कुछ घरेलू सत्संग आयोजित किये गए। हम पहले चार दिन श्रद्धालु कर्नल एलविन ऐशले तथा उनकी पत्नी गेल ऐशले के घर टैम्पल टैरिस नामक नगर में रहे। श्री माईकल लेमाण्ट की पत्नी श्रीमती जूडी लेमाण्ट टैम्पा नगर से हमें मिलने के लिए आईं। माईकल लेमाण्ट एक सफल भवन निर्माण का ठेकेदार है। १९७६ में इन्हीं के बहुत बड़े घर में परमदयाल जी महाराज ने एक दिन उनके तैरने के तालाब में छलांग लगाकर हम सब को चकित कर दिया था और वह काफी देर तक उस तालाब में तैरते रहे थे। चौथे दिन हम सैरासोटा में सुश्री ग्लोरिटया आलब्रिटन के स्थान 'ईस्ट वैस्ट सैण्टर' पर ठहरने के लिए गये। सुश्री ग्लोरिया का यह भवन, वह स्थान है, जहाँ पर परमदयाल जी महाराज ने सत्संग दिये। उन्हीं सत्संगों के कारण तथा अनेक रूहानी गतिविधियों के कारण इस केन्द्र में ऐसा वातावरण है कि जहाँ पर लोगों को शान्ति मिलती है।

सुश्री ग्लोरिया के निवास के दौरान में मैंने एक दिन में एक हो सत्संग दिया। मैं इसी परम्परा को भारत के दौरे के सत्संगों में कायम रखना चाहता हूँ। दो जून, शनिवार को परमदयाल जी महाराज की परम भक्त श्रीमती रूथ बुश के घर पर क्लीयरवाटर नगर में जनरल सत्संग रखा गया। यहाँ पर हमें मानवता धर्म के अमरीकी आचार्य कर्नल जोज़फ टकर 250 मील दूर से दो बार मिलने आये। दूसरे दिन श्रीमती रूथ बुश हमें सेण्टपीटर्जबर्ग में 'दी फ़र्ट

चर्च आफ़ ट्रुथ" नाम के चर्च में ले गई ; जहाँ पर शाम के सात बजे एक आम सत्संग आयोजित किया गया। इस सत्संग का आयोजन मानवता धर्म के दूसरे अमरीकी आचार्य गिल्बर्ट रिजगार्ड ने किया। इसके बाद का आखिरी आम सत्संग बृहस्पतिवार, ६ जून को वैनिस नगर में वैनिस म्यूनिसिपल कमेटी के भवन में फ्लोरिडा होलिस्टक हैल्थ फाउन्डेशन के अध्यक्ष डा० टैरी फ्रीडमैन तथा आचार्य गिल्बर्ट रिजगार्ड द्वारा किया गया। फ्लोरिडा के आचार्य और सत्संगी बहुत ही प्रेम-भाव रखते हैं। जब हम सात जून को क्लीयरवाटर के हवाई-अड्डे से रवाना हो रहे थे तो श्रीमती रूथ बुश, कर्नल ऐशले तथा गेल ऐशले इस अटपटे समय पर भी हमें विदा करने के लिए मौजूद थे। मैं यह सब आपको इसलिए बता रहा हूँ, क्योंकि मैं महसूस करता हूँ कि आप भी मेरे विदेशी दौरे के अनुभव में मानसिक रूप से भाग लें। इस तरह आप यह महसूस करेंगे कि मैं जहाँ जाऊँ आप मेरे साथ हैं। आप सब फकीर बाबा के उस मानव परिवार के सदस्य हैं, जो बिना किसी जाति-वाद, धर्म और राष्ट्रीयता के भेद-भाव के विश्व में फैला हुआ है।

हम प्रातःकाल बफ़लो न्यूयार्क पर सात बजे उतरे। बफ़लो के हवाई अड्डे से अपनी कार द्वारा दोपहर के एक बजे के लगभग हम क्लीवलैण्ड पहुँच गए। नौ जून को मैं साढ़े छः बजे प्रातःकाल क्लीवलैण्ड के अड्डे से ग्रीनवे विस्काउनसन में प्यारे अजीत कुमार जी के घर के लिए रवाना हुआ, क्योंकि मुझे पिछले वर्ष के वचन के अनुसार उनके घर एक सप्ताह से अधिक ठहरना था। श्री अजीत कुमार, उनकी पत्नी श्रीमती रमेश, उनके बेटे अजय कुमार, राज कुमार तथा विजय कुमार तथा उनकी बेटी रेणु पर अपार कृपा थी। जब भी परमदयाल जी अमेरिका में आते थे इस श्रद्धालु परिवार के यहाँ कुछ दिन ज़रूर ठहरते थे,

इसलिए अजीत कुमार जी के घर का वातावरण बहुत सुन्दर है।

श्री अजीत कुमार हर प्रातः को मेरे साथ उसी प्रकार लम्बी-सैर को जाते थे जैसे कि वह परमदयाल जी के साथ जाते थे। रविवार, १७ जून को दोपहर के दो बजे अजीत कुमार जी के घर सत्संग रखा गया, जहाँ पर ग्रीनवे तथा आस-पास के शहरों के अजीत कुमार जी के वे मित्र तथा उनके परिवार के लोग आए जो परमदयाल जी के समय आया करते थे। इनमें से अधिकतर सत्संगी बुद्धिवादी प्रोफेसर, डाक्टर तथा इन्जीनियर थे। यह सत्संग अंग्रेज़ी भाषा में दिया गया था और इसमें सम्मिलित होने वालों मे से दो मुसलमान तथा दो ईसाई परिवार भी थे। इससे यह जाहिर होता है कि सन्तमत वास्तव में व्यापक तथा सामाजिक सीमाओं से परे है।

१८ जून को श्री अजीत कुमार तथा उनकी पत्नी अपनी गाड़ी से मुझे कलामज़ मिशिन में हरियाणा के श्री जय भगवान के मकान पर ले गए। यहाँ पर हरियाणा के ही श्री बलजात सिंह तथा श्री राम सिंह तथा उनके परिवार के लोग सत्संग में शामिल हुए। डा० डेविड स्प्रैग की पत्नी श्रीमती जूडी स्प्रैग जो परमदयाल जी की वर्षों से भक्त है, अपनी एक अमरीकी सहेली के साथ उस सत्संग में शामिल हुई। यहाँ पर मैं यह बताना चाहता हूँ कि कलामज़ में रहने वाले हरियाणा के ये परिवार दिनोद के सन्त ताराचन्द जी महाराज के शिष्य हैं। परमदयाल जी द्वारा सन्त ताराचन्द जी को दिया गया वह आशीर्वाद सच्चा साबित हो रहा है कि उनके शिष्य सच्चे और प्रेमभाव वाले होंगे। हरियाणा के ये सभी लोग परमदयाल जी महाराज के भी भक्त हैं।

ब्लूमिंगटन इण्डियाना में ले आए जहाँ पर भाग्य माता जी एक सप्ताह पहले प्रियदर्शी के पास पहुँच चुकी थीं। आज बीस जून है। कल हम यहाँ से क्लीवलैण्ड जायेंगे। वहाँ एक दिन अरुण तथा मन्जू के पास रुक कर 23 जून को कार के द्वारा वर्जीनिया बीच, वर्जीनिया में सत्संग देने के लिए रवाना हो जायेंगे। वर्जीनिया-बीच से हम ३० जून को मेरीलैण्ड दिन भर के सत्संग के लिए कोलम्बिया पहुँच जायगे। इस सत्संग का इन्तजाम अमरीकी आचार्य डा० जौनेथन पीटर्ज तथा आचार्य थैल्मा कार्टर ने, प्रोफेसर श्रीमती यिल्डड मिकीनी तथा एटारनी श्रीमती जीटा की सहायता से किया है। पहली जुलाई से छः जुलाई तक हम बच्चों के साथ रहेंगे। इस अवधि में मैं एक दिन श्री राज खन्ना के घर सत्संग दूँगा तथा चार जुलाई अमरीका के स्वतन्त्रता दिवस के दिन मेरा रेडियो पर सत्संग प्रसारित होगा। छः जुलाई शाम को मुझे डा० के० सी० भाई जी के मकान पर एक सभा में शामिल होना है। सात और आठ जुलाई को फिर न्यूजर्सी में सत्संगी श्री लाल के घर पर तथा एक संस्था में दो सत्संग होंगे। वहाँ से ही हम, १० जुलाई को न्यूयार्क के हवाई-अड्डे से भारत के लिए रवाना हो जायगे। मैंने आपको यह खुलासा इसलिए दिया है कि आपको यह मालूम हो जाये कि मैं अपने गुरु की आज्ञा पालन करने में बहुत व्यस्त होते हुए भी आनन्द में हूँ। मैं आपकी और आपके ही विदेशी भाई-बहनों की सेवा करने में शान्ति प्राप्त करता हूँ। इन शब्दों के साथ मैं आपको आशीर्वाद और सद्भावना भेजता हूँ।

सदा आपका फ़कीरमय
**मानव**

---

आवश्यक सूचना

९ अगस्त १९८४ से १५ अगस्त १९८४ तक सियोल, दक्षिण कोरिया में अन्तर्राष्ट्रीय धार्मिक सम्मेलन हो रहा है, जिसमें देश-विदेश से विद्वानों, धर्माचार्यों, दार्शनिकों और

विख्यात धर्म-दर्शन सम्बन्धी लेखकों को निमंत्रित किया गया है।

परमसन्त मानव दयाल डा० ईश्वरचन्द्र शर्मा को इस सम्मेलन में एक शोध-पत्र पढ़ने और गोष्ठियों में क्रियात्मक भाग लेने के लिए निमंत्रित किया गया है। उनके शोध-पत्र का शीर्षक निम्नलिखित है, "धर्म और विज्ञान का पारस्परिक समन्वय—मानव और प्रकृति कारणता का आधार परम-तत्त्व में निहित है।"

हजूर महाराज जी, ९ अगस्त, ८४ के प्रातःकाल ३ बजे, एयर फ्रान्स के वायुयान से दिल्ली हवाई-अड्डे से यात्रा पर रवाना होंगे और १७ अगस्त, ८४ को वापिस आ जायेंगे।

---

शोक सन्देश

अत्यन्त दुःख के साथ सूचित किया जाता है कि श्री अजमेर सिंह कुंदी (X.E.N.), ग्राम-अररा, जिला-जालन्धर जो कि हजूर मानवदयाल जी के भक्त थे, का देहावसान दिनांक १६-३-८४ को दिल्ली में अचानक हृदय-गति रुक जाने से हो गया।

मानवता मन्दिर परिवार के सभी सदस्य उनके आकस्मिक देहान्त पर हार्दिक-शोक प्रकट करते हैं तथा उनके परिवार वालों के साथ हार्दिक समवेदना प्रकट करते हैं, साथ ही परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि उनकी दिवंगत आत्मा को शान्ति प्रदान करें तथा उनके परिवार वालों को इस असह्य दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करें।

---

अत्यन्त दुःख के साथ सूचित किया जाता है कि मानवता मन्दिर, होशियारपुर के वरिष्ठ सत्संगी एवं कर्मठ कार्यकर्ता श्री हरिभाई अग्रवाल (बावरी) का देहावसान दिनांक १३-३-८४ को गाँधी नगर, भीलवाड़ा में हो गया।

मानवता मन्दिर परिवार एवं समस्त राधास्वामी सत्संगियों को जो क्षति हुई है वह अवर्णनीय है। हम परमतत्त्वाधार से प्रार्थना करते हैं कि उनकी पवित्र-आत्मा को शान्ति प्रदान कर उन्हें परमधाम की प्राप्ति दें तथा उनके परिवार वालों को इस असह्य दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करें।

# वन्दनम्

चरण शरण की वन्दना, नित कोइ और न काम ।
गुरु बसो चित आय मेरे, बख्श दो निज नाम ।।
तेरी शरणागत हुआ फिर, किसकी राखूं आस ।
आस तो तेरी दया की, जग से रहूँ उदास ।।
रूप ध्याऊँ, नाम गाऊँ, शब्द राता मन ।
आठों याम तेरा ही सुमिरन, भाग मेरा धन ।।
सीस पर निज कर कमल धर, लिया चरण लगाय ।
पतित पापी तर गया, गुरु शरण तेरो आय ।।
मुक्ति की नहीं चाह मन में, भक्ति प्यारी लाग ।
राधास्वामी का दया से, भाग पूरन जाग ।।

---

मानवता मन्दिर में अगला मासिक सत्संग
19-8-84 को होगा ।

## सूचना

परमसन्त हजूर मानव दयाल जी महाराज, मूल्लापुर (चन्डीगढ़) के सत्संगियों के जोरदार अनुरोध पर ४, ५ सितम्बर १९८४ को मुल्लापुर में सत्संग देने के लिए पधार रहे हैं। सत्संग श्री नरेश वर्मा के प्रबन्ध में उनके घर, मुल्लापुर में दोनों दिन सायं ५ बजे होगा। सभी श्रद्धालु सत्संगी इस अवसर पर आमन्त्रित हैं। विशेष (पूरी) सूचना श्री नरेश वर्मा से प्राप्त करें।

Regd. No. 26265/74 AUGUST 10th 1984
MANAV MANDIR NWHSP—7

87-50
143-50

ADDRESS

5 भारत INDIA

To

934 Sh. Chiver Narsimulu
Muneem
P O & Tq Banswada
Distt. Nizamabad A.P.

From :

MANAVTA MANDIR
SUTEHRI ROAD,
HOSHIARPUR.
Phone : 2022

Shiv Dev Rao Press Manavta Mandir, Hoshiarpur (Pb.)